RNI NO. : MPHIN33094

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

वर्ष-12 वां अंक 48

संपादक - विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई
संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

मंगल आमंत्रण **मंगल महोत्सव** अवश्य पधारिये

सिद्धक्षेत्र गोपाचल से सुशोभित नगरी ग्वालियर के अंचल तिघरा में
नवनिर्मित श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जिनमंदिर का
श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल, ग्रेटर, ग्वालियर के तत्वावधान में आयोजित

श्री 1008 पार्श्वनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

बुधवार, 16 जनवरी 2019 से सोमवार, 21 जनवरी 2019 तक

स्थान : काशी नगरी, ग्वालियर

विशेष आकर्षण :

- नवीन जिनमंदिर की भव्य प्रतिष्ठा
- आत्मा से परमात्मा बनने की विधि का प्रत्यक्ष दर्शन
- देश के उच्चकोटि के विद्वानों के प्रवचनों का लाभ
- इंद्रसभा - राजसभा का भव्य प्रदर्शन
- जन्मकल्याणक के अवसर पर विशेष रत्नजड़ित भव्य पालना झूलन
- साधर्मी वात्सल्य मिलन

प्रतिष्ठाचार्य : यशस्वी प्रतिष्ठा शिरोमणि

बाल ब्र. पण्डित अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री

निर्देशन : तीर्थधाम मंगलायतन

मंच संचालक : पण्डित संजयजी शास्त्री, मंगलायतन

आयोजक : श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव समिति, ग्वालियर म.प्र.

सम्पर्क : इस महामहोत्सव में आप सपरिवार पधारकर अध्यात्म की त्रिवेणी में स्नान करें साथ ही इन्द्र-इन्द्राणी, राजा-रानी, लौकान्तिक देव आदि पदों को स्वीकृत कर अपनी सहभागिता सुनिश्चित करें।

संपर्क सूत्र - मनोज जैन 9425120700, उत्तम जैन 9752210442, सुनील कुमार शास्त्री 9826215577 अजीत जैन 9826256121

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका
चहकती चेतना

जन्मदिवस की शुभकामनायें

अवर्णया -एसना भगिनी द्वया, पाया धर्म महान ।
निज अनुभव पुरुषार्थ से, बनो सिद्ध भगवान ।।

अवर्णया अनुभव जैन
जबलपुर, अक्टूबर

एसना अंकित जैन
जबलपुर, अक्टूबर

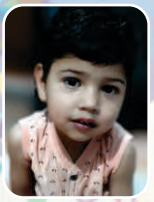

जिन **आग्रह** - संयम में जीवन, प्रज्ञा निज में रक्त रहो ।
रहे **अनुज्ञा** जिनवाणी में, मुक्ति पंथ भगवंत लहो ।।

आग्रह आलोक जैन
आगरा, 7 अक्टूबर

अनुज्ञा आशीष जैन
टीकमगढ़, 23 अक्टूबर

श्री अरिहंत को नमन हो, जलें ज्ञान प्रदीप।
क्षायिक पद को प्राप्त कर, तोड़ो जग से प्रीत।।

क्षायिक अरिहन्त चौधरी,
किशनगढ़ राज. 29 अक्टूबर 2018

जिनधर्म की बेटी **शुभिता**, मुख पर हो मुस्कान।
काम धर्ममय ऐसे होंवे, जगत करे गुणगान।।

शुभिता पहाड़िया, किशनगढ़ 18 दिसम्बर 2018

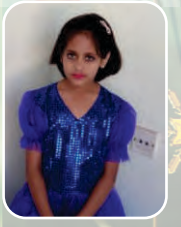

उत्तम भव जिनधरम मिला, है सौभाग्य महान।
अश्मि धर्म के तिलक से, पाओ मुक्ति धाम।।

अश्मि तिलक चौधरी,
किशनगढ़ 20 दिसम्बर 2018

शुभकामनायें

म्हसवड, नातेपुते महा. निवासी
प्रथम **संजीव दोशी** ने 10वीं कक्षा की परीक्षा
में 97.5 प्रतिशत प्राप्त कर म्हसवड में प्रथम स्थान
प्राप्त किया। चहकती चेतना परिवार की ओर से
बधाईयाँ।

अपने सम्बन्धियों और मित्रों को
चहकती चेतना को उपहार दीजिये

आज के समय में अपने बच्चों में नैतिक संस्कारों की अत्यंत आवश्यकता है। साथ ही जिनधर्म के संस्कार होना तो महासौभाग्य है। परन्तु आज की स्कूली शिक्षा और अन्य गतिविधियों में संस्कार देने का समय ही नहीं मिल पाता और यदिसमय बचता भी है तो मोबाइल और टीवी में सारा समय व्यर्थ हो जाता है। ऐसे समय में चहकती चेतना विश्व की एकमात्र बाल-युवा धार्मिक पत्रिका है जिसके माध्यम से जिनधर्म का वैभव, पौराणिक कहानियाँ, नई रोचक जानकारियाँ और अन्य अनेक जानकारियाँ प्रकाशित की जातीं हैं।आप अपने सम्बन्धियों और मित्रों के बच्चों को प्रसंग होने पर उन्हें गिफ्ट अवश्य देते हैं तो एक बार यह पत्रिका उन्हें गिफ्ट दीजिये। यह संस्कारों को देने में निमित्त महान प्रभावना भी होगी।

अब चहकती चेतना के सदस्य बनना और बनाना बहुत ही आसान है। आप पूर्व की भांति शुल्क ऑनलाईन हमारे बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं साथ ही आप अब 9300642434 पर पेटीएम से भुगतान कर हमें एसएमएस या व्हाट्सएप्प द्वारा सूचित कर सकते हैं।

तो देर किस बात ही आज ही अपने मित्रों और सम्बन्धियों को चहकती चेतना उपहार में दीजिये।

400/-रु. तीन वर्ष हेतु 1200/-दस वर्ष हेतु

आप 11000/- द्वारा चहकती चेतना के स्थायी स्तंभ बनकर आजीवन सदस्य बनें और पाईये संस्था द्वारा समस्त वीडियो सीडी, साहित्य और अन्य सामग्री।

आध्यात्मिक, तात्विक, धार्मिक एवं नैतिक
बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

प्रकाशक
श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई

संस्थापक
आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर म.प्र.

संपादक
विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रबंध संपादक
स्वस्ति विराग जैन, जबलपुर

डिजाइन/ ग्राफिक्स
गुरूदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

परमशिरोमणि संरक्षक
श्रीमती स्नेहलता धर्मपत्नि जैन बहादुर जैन, कानपुर
डॉ. उज्ज्वला शहा - पंडित दिनेश शहा, मुम्बई

परमसंरक्षक
श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई
श्री प्रेमचंदजी बजाज, कोटा
श्रीमति आरती पुष्पराज जैन, कन्नौज (उ.प्र.)

संरक्षक
श्री आलोक जैन, कानपुर
श्री सुनीलभाई. जे. शाह, भायंदर, मुम्बई
Agraeta Technik P. Ltd., Virar, Thane MH.

मुद्रण व्यवस्था
स्वस्ति कम्प्यूटर्स, जबलपुर

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय
''चहकती चेतना''
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,
फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002
9300642434, 09373294684
chehaktichetna@yahoo.com

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें

www.vitragvani.com

क्र.	विषय	पेज
1.	सूची	1
2.	संपादकीय	2-3
3.	रायसेन और विदिशा	4-5
4.	वीरांगना - अब्बाका / अन्याय	6-7
5.	लाल सवासिंह / एक मुस्लिम ऐसा भी	8-9
6.	परिवर्तन	10-11
7.	प्रेरक प्रसंग - भक्ति/नंगा फकीर	12
8.	प्रेरक प्रसंग - बलिदान / महानता	13
9.	कविता - कोई अर्थ नहीं	14
10.	थिंक अगेन	15
11.	पोस्टर दीवाली	16-17
12.	बच्चों के ब्रश से	18
13.	जैन धर्म की सर्वोत्कृष्टता	19
14.	उपाय	20
15.	हाँ ! मैं माली हूँ	21-22
16.	अब नहीं नाचूँगी	23-24
17.	तमिलनाडू में जैन धर्म	25-26
18.	सावधान मोबाईल	27-28
19.	समाचार - ज्ञानोदय ..... / पूना.....	29-30
20.	भारत माता मंदिर	31-32

सदस्यता शुल्क - 400 रू. (तीन वर्ष हेतु)
1200 रू. (दस वर्ष हेतु)

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप ''चहकती चेतना'' के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से ''चहकती चेतना'' के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।
पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क्र.- 1937000101030106
IFS CODE : PUBN0193700

प्रासंगिक संपादकीय

अपने बच्चों को देव-शास्त्र-गुरू का स्वरूप जरूर समझायें..

पिछले कुछ महीनों से जैन समाज में कुछ मुनियों के आचरण से सम्बन्धित घटनायें हलचल पैदा कर रही हैं। जिस मुनि दीक्षा को मोक्ष का साधन मानकर स्वीकार किया जाता रहा है, उसी मुनि पद को अपने वासना की पूर्ति का साधन बनाने का महापाप किया जा रहा है। दिगम्बर मुनिराज अर्थात् धरती का आश्चर्यकारी व्यक्तित्व जिसे शास्त्रों में सिद्धों का लघुनन्दन भी कहकर अभिनन्दन किया गया है। प्रतिज्ञापूर्वक मुनिदीक्षा लेकर उसकी आड़ में छिपकर होटल का भोजन करना, भारत के स्वतंत्रता दिवस पर दिगम्बर जिनप्रतिमा का तीन रंग से अभिषेक करना, स्त्रियों से व्यभिचार करना और पकड़े जाने पर बेशर्मी से अपने पाप को ढंकना और धन के बल पर अपने दुराचार को नकारना, दिगम्बर अवस्था में होकर इलाज के लिये अस्पतालों में भर्ती होना और इलाज असंभव दिखने पर मजबूरी में समाधिमरण की घोषणा और उसे अन्य मुनिराजों के द्वारा ऐतिहासिक और महान व्यक्तित्व की उपमा देना जैसी अनेक घटनाओं ने जिनधर्म के स्वरूप की गरिमा को खण्डित किया है।

समाज के स्वार्थी नेताओं द्वारा इन कार्यों की मौन स्वीकृति मुनि स्वरूप की गलत परिभाषा बना रही है। आज की पीढ़ी मुनिधर्म के सच्चे स्वरूप की जानकारी न होने से अंधश्रद्धा से नीतिविहीन मुनिवेश धारी को सच्चा गुरू मान रही है। किसी के पीछे हजारों की भीड़ उसकी सत्यता का प्रमाण नहीं हो सकती। भीड़ तो फिल्मी अभिनेताओं और नेताओं के पीछे भी होती है तो क्या वे सच्चे हो गये ? आज आवश्यकता है कि हम स्वयं शास्त्रों के आधार से देव-शास्त्र और मुनिधर्म के स्वरूप को समझें और अपने बच्चों को भी समझायें। वरना गलत परम्परायें जिनधर्म की बहुत हानि करेंगीं।

अभी 15 फरवरी 2018 से 15 सितम्बर 2018 तक श्रवणबेलगोला में गोम्मटेश्वर बाहुबली को महामस्तकाभिषेक संपन्न हुआ। हर दिन हजारों लीटर पानी, दूध, दही, केशर और अनेक वस्तुओं से 12 घंटे तक

लगातार अभिषेक का आडम्बर किया गया। बेशर्मी तो तब हो गई कि राजनेताओं ने कुर्ते पायजामा में, महिलाओं ने अशुद्ध वस्त्रों में, लड़कियों ने जीन्स-टॉप में भगवान का अभिषेक किया और अनेक साधु और नामधारी विद्वान शास्त्रों का प्रमाण देकर उसे सही सिद्ध ठहराते रहे। पूरे देश के जैनसमाज में श्रवणबेलगोला पहुँचने की होड़ लग गई, फेसबुक पर भगवान को पीठ दिखाते हुये सेल्फी की भरमार हो गई। लगातार अभिषेक से बाहुबली भगवान की प्रतिमा में काई-गन्दगी जम गई, प्रतिमा का रंग बदल गया, अनन्त जीव राशि पैदा हो गई और कुछ प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार प्रतिमा के आसपास बदबू भी आने लगी। बेचारे.... भगवान बाहुबली....वे तो कुछ बोल ही नहीं सकते थे। इतनी बात समझ में नहीं आई कि शील की रक्षा में नव बाढ़ पालने वाले महाब्रह्मचर्य के धनी दिगम्बर मुनिराजों से ही जब महिलाओं को सात हाथ दूर रहने की आज्ञा है, आर्यिका भी अपनी बड़ी आर्यिका उपस्थिति में ही पाँच हाथ दूर से प्रश्न पूछ सकती है और उस समय नजरें नीची करके बात करती है तो भगवान की प्रतिमा कैसे स्पर्श कर सकती है ? तर्क ये दिया जाता है कि तीर्थंकर को जन्म देने वाली स्त्री होती है, हाँ सच है परन्तु यह गृहस्थ अवस्था की बात है। क्या शास्त्रों में कहीं उल्लेख है कि महावीर के मुनिदीक्षा लेने के बाद उनकी माँ उनके पास गईं ?

जब अकलंक-निकलंक के समय में जिनप्रतिमा पर एक धागा डालने मात्र से प्रतिमा अपूज्य हो गई थी तो यह रंगीन प्रतिमा पूज्य कैसे रह पाई ? और पराकाष्ठा तो तब हो गई तब श्रवणबेलगोला पहुँचकर अभिषेक करने में तेरापंथी आम्नाय के पुरोधा, साधर्मी और आध्यात्म और निर्दोष जैन शासन का नारा देने वाले अनेक मुमुक्षु भी शामिल हो गये। क्या ये सरागी प्रतिमा की अनुमोदना नहीं है...?

जिनप्रतिमा जिनसार की कही जिनागम मांहि। रंच मात्र दूषण लगे सो पूजनीक वह नाहीं। - शास्त्रों की इन पक्तियों का क्या होगा ?

आज हमारी पूज्यता का आधार वीतरागता नहीं बल्कि भीड़ हो गई है। धन की वासना में विवेक अंधा हो गया है। जहाँ ज्यादा भीड़ वहीं ज्यादा पूज्यता। सत्य का निर्णय दूसरों के भरोसे हो गया। बैंक का कर्मचारी हमें 1 लाख गिनकर दे तो हम फिर से गिनकर देखते हैं लेकिन हमारे देव-शास्त्र-गुरु का निर्णय दूसरों के भरोसे ...

यदि हम जिनधर्म के इस बिगड़ते स्वरूप के बारे में मौन रहे तो आने वाली पीढी में जिनधर्म का विकृत रूप ही आगे बढ़ेगा। समाज को न सही, हम अपने बच्चों को सत्य स्वरूप बता सकते हैं। वरना जिनधर्म की विकृत परम्परा की मौन स्वीकृति का अपराध का दण्ड क्या होगा ?

इसका आप स्वयं विचार करें .....

- विराग शास्त्री

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका
चहकती चेतना

रायसेन और विदिशा

मध्यप्रदेश के रायसेन नगर का ऐतिहासिक महत्व है। भोपाल से लगभग 50 किमी की दूरी पर स्थित रायसेन में एक किला है। इसकी पश्चिमी पहाड़ी में भगवान राम के चरण चिन्ह उत्कीर्ण हैं। ऐसा माना जाता है कि युवराज राम वनवास के समय यहाँ आये और यहाँ शयन किया जिसके कारण इस नगर का नाम रामशयन हुआ जिसे अब रायसेन के नाम से जाना जाता है।

इस किले में प्राचीन खण्डहर है। इसमें एक मस्जिद भी है जो कि पूर्व में जैनमंदिर था, जिसे मुस्लिम शासन के समय मस्जिद बना दिया गया। आज भी मस्जिद में जैनमंदिर के प्रमाण के अनुसार एक वेदी बनी हुई है।

रायसेन की पूर्व दिशा में रामगढ़ स्थान है। रामगढ़ में देवों ने विक्रिया से अयोध्या नगरी का निर्माण किया था। इसी नगरी में वनवास के समय राम, लक्ष्मण और सीता ने कुछ समय तक निवास किया था।

रायसेन के समीप वीरपुर में बांस का जंगल है जहाँ खरदूषण के पुत्र शंबूक ने चन्द्रहास तलवार की सिद्धि के लिये तप किया था। लक्ष्मण वहाँ गये और उन्हें देवों द्वारा दी गई चन्द्रहास तलवार देखी और उसे हाथ में लेकर अनजाने में बांस के पेड़ों में चलाई उसमें बैठा शंबूक मारा गया।

इसी तरह विदिशा के सम्बन्ध में ऐतिहासिक साक्ष्य मिलते हैं। विदिशा से 8 किलोमीटर दूरी पर भद्दिलपुर अतिशय क्षेत्र है। सम्राट चन्द्रगुप्त ने दिग्विजय के बाद आचार्य भद्रबाहु के उपदेश से प्रभावित होकर जिनधर्म स्वीकार किया। एक दिन आचार्य भद्रबाहु आहार हेतु नगर में आये तब किसी घर के पालने में दूध पीते बच्चे ने आचार्य के आते ही कहा कि जाओ-जाओ। निमित्तज्ञानी आचार्य भद्रबाहु को ज्ञान हुआ कि उत्तर भारत में 12 वर्ष का अकाल पड़ने वाला है। आचार्य भद्रबाहु ने उज्जैन से जैनबद्री की ओर विहार किया। उस समय आचार्य भद्रबाहु भेलसा पधारे। इसके बाद इसका नाम भादलपुर रखा गया जिसे अब भद्दिलपुर कहा जाता है।

विदिशा नगरी में आचार्य भद्रबाहु का प्रथम उपदेश हुआ और सम्राट चन्द्रगुप्त ने मुनिदीक्षा ली। यहाँ की उदयगिरि की गुफा नम्बर 13 में इसका चित्र भी बना हुआ है। विदिशा नगरी में भगवान शीतलनाथ के गर्भ, जन्म

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका
चहकती चेतना

और तप तीन कल्याणक हुये हैं। यहाँ भगवान नेमिनाथ का समवशरण भी आया था। इस ऐतिहासिक नगरी से 30 जैनाचार्य पट्टाधीश हुये हैं।

सम्राट अशोक की ससुराल विदिशा की थी। विदिशा के श्रेष्ठि की पुत्री असंघमित्रा से अशोक का विवाह हुआ था। इसकी स्मृति स्वरूप सम्राट अशोक ने अशोक कीर्ति स्तंभ का निर्माण और भगवान नेमिनाथ के समवशरण की रचना पत्थर पर उत्कीर्ण करवाई है।

विदिशा में ही जैन मुनि लोहाचार्य ने अन्य धर्मियों से शास्त्रार्थ कर विजय प्राप्त की थी। समन्तभद्र आचार्य ने यहाँ आकर जैनधर्म का प्रचार किया। महासमर्थ आचार्य अकलंक देव ने ग्यारसपुर, विदिशा आदि निकट के क्षेत्रों में बौद्धों से शास्त्रार्थ कर उन्हें पराजित किया। यहाँ के विजय मंदिर के शिलालेख में सभी घटनाओं का उल्लेख है।

इस तरह विदिशा और रायसेन की ऐतिहासिकता के अने प्रमाण उपलब्ध होते हैं।

साभार -विदिशा का वैभव - श्री राजमलजी मड़वैया

चहकती चेतना के केलेण्डर हेतु सहयोग आमंत्रित

चहकती चेतना का वार्षिक रंगीन केलेण्डर प्रकाशित होने जा रहा है। आपको विदित ही होगा कि यह केलेण्डर रचनात्मक और नवीन जानकारियों क साथ सचित्र और रंगीन प्रकाशित होता है।

इस वर्ष यह केलेण्डर 3000 की संख्या में प्रकाशित होगा। इसके प्रकाशन में विज्ञापन के रूप में आपका सहयोग आमंत्रित है। नीचे विज्ञापन देने के लिये आप हमसे संपर्क करें। संपादक : विराग शास्त्री - 9300642434

सासाहित्य प्राप्त करें

1. पंचास्तिकाय संग्रह
आचार्य अमृतचन्द्र एवं आचार्य जयसेन की टीकाद्वय सहित
संपादक -
स्व.डॉ.उत्तमचन्दजी जैन,सिवनी
मूल्य - निःशुल्क

2. रत्नत्रय विधान
रचनाकार : पण्डित आशाधरजी
हिन्दी पद्यानुवाद :
पण्डित अभयकुमारजी देवलाली
पेज : 52 मूल्य - 10/-

3. श्री अजितनाथ पंचकल्याणक विधान
रचनाकार : कविवर राजमलजी पवैया
पेज : 48 मूल्य - 10/-

उक्त साहित्य प्राप्त करने के इच्छुक साधर्मी अपनी आर्डर संख्या पूरे पते सहित 9300642434 पर व्हाट्सएप करें।

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका
चहकती चेतना

वीरांगना अब्बाका

सन् 1500 के समय भारत में पुर्तगाली साम्राज्य था। उन्होंने कालीकट के जमोरिन्स को नष्ट किया, फिर बीजापुर के सुल्तान को हराया, गुजरात के सुल्तान से दमन छीन लिया, माइलपुर में एक उपनिवेश स्थापित किया, मुम्बई पर कब्जा कर लिया और गोवा को उनके मुख्यालय के रूप में बनाया। पुर्तगालियों ने एक चर्च बनाने के लिये प्राचीन हिन्दू कपलेश्वर मंदिर को बरबाद कर दिया। इनका अगला लक्ष्य था - मैंगलोर का अत्यन्त लाभदायक बन्दरगाह। लेकिन उनका दुर्भाग्य सामने आ गया। मैंगलोर से केवल 14 किलोमीटर दक्षिण में उल्लाल नाम का छोटा सा राज्य था और वहाँ 30 वर्षीय अब्बाका चौटा नाम की महिला शासन करती थी। पुर्तगालियों ने सोचा कि यह तो छोटा सा राज्य है, इसे आसानी से जीत लेंगे। उन्होंने कुछ सैनिकों को कुछ नौकाओं उल्लास को जीतने के लिये भेजा परन्तु वे नौकायें वापस नहीं आईं। पुर्तगाली एडमिरल डोम अलवारो दा सिल्वीरा को बहुत आश्चर्य और क्रोध आया। इस बार उसने बड़े जहाजों के साथ अधिक सैनिकों के साथ भेजा। इस बार भी अब्बाका चौटा के हाथों बुरी तरह से हारकर वापस आ गये। इसके बाद एक और बड़ा पुर्तगाली बेड़ा भेजा। इस बार उल्लाल के कुछ सैनिक घायल हुये परन्तु पुर्तगालियों को वापस भेजने में सफल रहे। अब पुर्तगालियों का मैंगलोर के पहले का लक्ष्य था उल्लाल पर कब्जा करना और अब्बाका चौटा का पकड़ना। पूरी पक्की योजना बनाई गई और हजारों सैनिकों को उल्लाल को जीतने और अब्बाका को पकड़ने के लिये भेजा गया। अब्बाका की छोटी सी सेना पुर्तगालियों की बड़ी सेना और बड़े हथियारों से मुकाबला करने में सक्षम नहीं थी।

पुर्तगाली सैनिक उल्लाल पहुँचे परन्तु उन्हें वहाँ कोई नहीं मिला। पूरा उल्लाल वीरान

सा दिख रहा था। उन्होंने सोचा कि अब्बाका हमसे डरकर भाग गई और वे आपस में ही जीत की बधाईयाँ देने लगे। तभी अचानक अब्बाका ने अपने सैनिकों के साथ उन पर हमला कर दिया। अचानक हुये इस हमले में अनेक पुर्तगाली सैनिक बिना लड़े ही मारे गये। पुर्तगाली जनरल जियोओ पिक्सोटो की हत्या कर दी गई, 70 पुर्तगाली सैनिक पकड़े गये और बाकी सैनिक भाग गये।

उसी रात अब्बाका चौटा ने पुर्तगालियों पर हमला कर दिया और पुर्तगाली सेना के प्रमुख एडमिरल मस्करेनहास की हत्या कर दी और पुर्तगालियों से महल खाली करा लिया। इसके वह अपनी सेना के साथ मैंगलोर के उत्तर में 100 किमी दूर कुंडापुर में पुर्तगाली राज्य पर कब्जे के लिये चल पड़ी। अंत में पुर्तगालियों ने अब्बाका के पति को रुपयों का लालच देकर उसे अपनी ओर मिला लिया। पति के विश्वासघात के कारण अब्बाका हार गईं और पकड़ी गईं। उन्हें जेल भेज दिया गया। जेल में भी उन्होंने विद्रोह किया और देश के लिये लड़ते - लड़ते अपने प्राण त्याग दिये।

आपको जानकर आश्चर्य होगा कि अब्बाका चौटा जैन थीं जिन्होंने 1857 की आजादी की प्रथम क्रांति के 300 वर्ष पहले पुर्तगाली सेना के खिलाफ संघर्ष किया। भारत सरकार ने उनके शौर्य को याद करते हुये एक डाक टिकिट भी जारी किया है ।

अन्याय

मीरा! दवा के लिये आम के तीन पत्ते तोड़ लाना। गांधी बापू का आदेश पाते ही मीरा एक डाली ही तोड़ लाई और बापू को देने लगी। बापू ने लेने से मना कर दिया।

मीरा ! ये क्या है ? - बापू ने कड़क आवाज में पूछा।

बापू! ये पत्ते तोड़कर लाई हूँ..।

जरा! गिनना, ये कितने पत्ते हैं ?

बापू! ग्यारह पत्ते हैं।

मीरा! मैं नहीं समझता था कि तू भी अन्याय और चोरी कर सकती है। मैंने तीन पत्ते मांगे थे और तुम 11 पत्ते तोड़ लाईं, यह सरासर अन्याय है और जरूरत से ज्यादा वस्तु रखना सामाजिक अपराध और चोरी है।

मीरा ने कांपते हुये दोनों हाथ जोड़कर बापू से क्षमा मांगी।

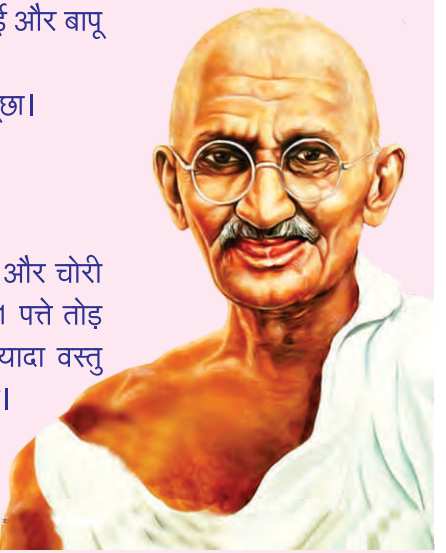

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका
चहकती चेतना

लाला सवा सिंह जैन

मध्यप्रदेश के अशोक नगर में चन्देरी नाम का छोटा सा गांव है। यह चन्देरी कलात्मक साड़ियों के साथ जिनमंदिर में विराजमान चौबीसी के लिये भी विख्यात है। सन् 1875 में चन्देरी के जैन धर्म के अनुयायी खण्डेलवाल जैन लाला सवासिंहजी 24 तीर्थंकरों की 28 विशाल प्रतिमायें बैलगाड़ी में रखकर लेकर आये, उस समय रास्ते में जैन साधर्मियों ने प्रतिमाओं की भव्य अगवानी की और दान स्वरूप 84000/- रुपये प्राप्त हुये थे।

लालाजी की सोनागिर में एक विशाल जिनमंदिर बनवाया और उसका गजरथ पंचकल्याणक करवाने की भावना हुई तक उन्होंने दतिया के राजा विजय बहादुर सिंह के सामने गजरथ का प्रस्ताव रखा तब राजा साहब ने गजरथ की अनुमति दे दी। फिर लालाजी ने गजरथ के अनुसार भोजन आदि की आवश्यक सुविधाओं की मांग की तो राजा ने सुविधायें देने से साफ मना कर दिया और कठोर शब्दों में कह दिया कि बनियों को किसी भी प्रकार की सुविधायें नहीं दी जा सकतीं। यह बात लालाजी का बहुत बुरी लगी। वे वापस चन्देरी आ गये। सवासिंह जी बुन्देल के क्षत्रिय पुरुषों से अच्छा सम्बन्ध था। ग्वालियर के श्रीमन्त दौलतरावजी सिंधिया भी इनका सन्मान करते थे। घर आकर उन्होंने मित्र सैनिकों और बुन्देलों को अपनी गजरथ करने की भावना बताई और दतिया के राजा की बात भी बताई। यह सुनकर सभी ने गजरथ की भावना को स्वीकार किया और बहुत ही कम समय में सारी सुविधायें और साम्रगी एकत्रित कर ली।

सन् 1896 में बैलगाड़ियों में सारा सामान भरकर गजरथ के लिये सोनागिरि रवाना हुये। उन्होंने गाड़ीवालों का आदेश दिया कि सारी गाड़ियाँ दतिया शहर के बीच बाजार से और राजमहल के सामने से होकर सोनागिर जायेंगी और सभी गाड़ियाँ प्रातः 8 बजे से निकलना प्रारम्भ हों और एक बैलगाड़ी और दूसरी बैलगाड़ी के बीच में कोई अंतर नहीं होना चाहिये। आदेश के अनुसार प्रातः 8 बजे दतिया शहर के बीच से गाड़ियाँ निकलना शुरु हो गईं। इस काफिले में इतनी बैलगाड़ियाँ थीं कि तीन दिन और रात तक भोजन और अन्य सामग्री की बैलगाड़ियाँ निकलतीं रहीं। पूरे नगर में हलचल मच गई और राजासाहब को सन्देश पहुँचाया गया। राजा विजय बहादुर ने जब महल के सामने से बैलगाड़ियों की कई किलोमीटर लम्बी कतार को देखा तो वे आश्चर्यचकित रह गये। जब उन्हें मालूम हुआ कि ये सभी गाड़ियाँ

लाला सवासिंह के नेतृत्व में सोनागिर में गजरथ के लिये जा रहीं हैं तो उन्हें अपनी भूल का एहसास हुआ और उन्होंने अपनी गल्ती स्वीकार की।

लालाजी ने सोनागिर में गजरथपूर्वक पंचकल्याणक करवाया और नवीन जिनमंदिर में जिनबिम्ब विराजमान किये। लालाजी ने एक प्रतिमा रामनगर में भी विराजमान करवाई थी वह प्रतिमा अब चन्देरी के जिनमंदिर में विराजमान है। एक प्रतिमा उन्होंने ललितपुर में अपनी हवेली के अटाक्ष पर विराजमान की थी, वह हवेली जिनमंदिर के रूप में है जिसे अटा का मंदिर कहा जाता है। लालाजी के वंशज कुंवर पद्मसिंह, कुंवर दिलीप सिंह, कुंवर प्रदीप सिंह आज चन्देरी, उज्जैन, अचलगढ़, आदि स्थानों पर निवास करता है।

ऐसे महापुरुष थे लाला सवासिंह जिन्होंने जिनशासन की प्रतिष्ठा बढ़ाई।

एक मुस्लिम ऐसा भी

जैन धर्म किसी व्यक्ति पर आधारित नहीं है और न ही किसी व्यक्ति विशेष के लिये है। यह महान जैन धर्म चारों गति के सभी जीवों के लिये है। इस बात को सिद्ध किया राजस्थान के बीकानेर जिले के 78 वर्षीय मुस्लिम भाई हाफिज कादरी साहब ने।

हाफिज साहब जैनधर्म के सिद्धान्तों से इतना प्रभावित हुये कि उन्होंने आजीवन मांसाहार का त्याग कर दिया है। ईद के दिन घर और पड़ोस में हिंसा के दृश्य न देखना पड़ें इसलिये वे अपने मित्र कल्याण के घर चले जाते हैं।

वे रात्रि भोजन नहीं करते और कमाल की बात यह है कि वे अब तक 16 बार अष्टान्हिका के व्रत कर चुके है। बीकानेर में मुनियों के आगमन होने पर वे नियमित उनके प्रवचनों का लाभ लेते हैं। विशेष धार्मिक पर्वों पर वे एक समय ही, एक ही आसन से मौनपूर्वक भोजन करते हैं। इस दिन में एक बार ही नमक, मिर्च, तेल, घी वाला भोजन न लेकर मात्र उबला हुआ भोजन लेते हैं और उबला हुआ पानी ही पीते हैं। रात्रि में पानी का भी त्याग रहता है। इस दिन रात्रि को मौन रखते हैं।

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका
चहकती चेतना

परिवर्तन

अंग देश के चम्पापुरी नामक नगरी का राजा बहुत धर्मात्मा, दानी और प्रजा की भलाई करने वाला था। उसके राज्य में एक नाग शर्मा नाम का पुरोहित रहता था। वह बहुत ही क्रोधी स्वभाव का था। उसके विपरीत उसकी बेटी नागश्री बहुत ही दयालु स्वभाव की थी।

एक दिन नागश्री अपनी सहेलियों के साथ पीपल के पेड़ की पूजा करने जा रही थी। रास्ते में उसने देखा कि बहुत से लोग बड़े ध्यान से मुनिराज का उपदेश सुन रहे थे। उनके उपदेश में अपूर्व शांति और सम्मोहन था। वह भी उनसे प्रभावित होकर उनके उपदेश सुनने के लिये बैठ गई। मुनिराज के उपदेश में पाँच पापों के फल और पाँच अणुव्रत की बात आई तो नागश्री ने मुनिराज से पाँच अणुव्रत का नियम ले लिया। जब उसके पिता नाग शर्मा ने अपनी बेटी के जैन मुनि से अणुव्रत ग्रहण की बात सुनी तो उसे बहुत क्रोध आया।उसने नागश्री से जैनव्रत छोड़ने के लिये कहा। वह अपनी पुत्री को साथ लेकर मुनिराज को व्रत वापस करने चल पड़ा।

रास्ते में कुछ सैनिक एक आदमी को बांधकर ले जा रहे थे। सैनिकों से पूछने पर पता चला कि यह नगर के करोड़पति सेठ का बेटा है। रुपयों के लेन-देन के कारण इसने एक व्यक्ति की हत्या कर दी इसलिये फांसी की सजा हुई है। नागश्री ने कहा - पिताजी! यदि हिंसा के कारण इतना दुःख मिलता है तो मैंने तो अहिंसा व्रत लिया है उसे क्यों छोड़ूँ तो नाग शर्मा ने कहा - ठीक है एक व्रत रख लो पर बाकी के चार वापस कर दो। आगे बढ़ने पर देखा कि एक व्यक्ति को दण्ड दिया जा रहा था। कारण पूछने पर पता चला कि इस व्यक्ति ने राजा से झूठ कहा कि सेनापति लड़ाई में मारा गया है और बाद में सेनापति युद्ध जीतकर वापस आया। झूठ कहने के कारण राजा ने उसे दण्ड दिया है। यह सुनकर नागश्री ने कहा - पिताजी! मैंने तो इस झूठ पाप का ही तो त्याग किया है तब पिता ने कहा कि ठीक है ये भी रख लो। तीन

तो वापस कर दो। आगे चलने पर दोनों ने देखा कि कुछ सैनिक एक व्यक्ति को मारते हुये लेकर जा रहे थे। वह व्यक्ति पिटाई के कारण रो रहा था। नाग शर्मा के कारण पूछने पर सैनिकों ने बताया कि यह व्यक्ति चोरी करते हुये पकड़ा गया है। इसलिये दण्ड के लिये राजा के पास लेकर जा रहे हैं। तब बेटी ने कहा - पिताजी! मैंने तो चोरी को त्याग किया है। क्या आप चाहते हैं कि मैं ऐसी सजा पाऊँ..? तब पिता ने कहा - अच्छा ठीक है, चोरी त्याग का भी नियम रख ले।

थोड़ा आगे चलने पर देखा कि एक स्त्री की नाक से खून निकल रहा था और उसकी चोटी से एक पुरुष का गला बंधा हुआ था। उसके पास सैनिक भी खड़े थे। इतनी दर्दनाक दशा देखकर कारण पूछने पर पता चला कि इन दोनों ने व्यभिचार किया है। तब नागश्री ने अपने पिता की ओर देखा तो पिता ने तुरन्त समझकर बोल दिया कि ठीक है, ये नियम भी रख ले। पर एक नियम तो वापस करके ही आयेंगे। यह सुनकर नागश्री मुस्कराने लगी। आगे चलने पर सैनिक एक व्यक्ति को लातें मारते हुये लेकर जा रहे थे। पीछे एक सैनिक भैंस लेकर चल रहा था। जब इसका कारण पता किया तो पता चला कि इस व्यक्ति ने एक व्यापारी की भैंस ले ली और लोभ के कारण उसे उसके रुपये नहीं दिये। इसलिये इसे सजा मिली है। तब नागश्री ने कहा - मैंने तो ऐसे लोभ का भी त्याग किया है। अब नाग शर्मा चुपचाप रह गया फिर कुछ समय बाद बोला - अच्छा! सब व्रत रख ले परन्तु उन मुनिराज से मुलाकात तो करा दे। नागश्री अपने पिता को लेकर मुनिराज के पास पहुँची। मुनिराज की अत्यंत शांत और भव्य दिगम्बर मुद्रा देखकर नाग शर्मा को अपने विचारों पर बहुत पछतावा हुआ। वह मुनिराज के चरणों में गिर पड़ा और उसने भी मुनिवर के सामने पाँच अणुव्रत ग्रहण कर लिये। धन्य हैं दिगम्बर मुनिराज।

प्रेरक प्रसंग

बुन्देलखण्ड के संत क्षुल्लक श्री गणेशप्रसादजी वर्णी अपने एक साथी के साथ सागर जा रहे थे। रास्ते में बहेरिया ग्राम में रुककर कुंये पर पानी पीने लगे। एक औरत उनको देखकर रोने लगी। वर्णीजी ने रोने का कारण पूछा तो उसने कहा कि मेरा पति मर गया है और देवर मुझे भरपेट भोजन भी नहीं देता। मेरे पास कुछ भी नहीं है।

उसकी कथा सुनकर वर्णीजी ने लंगोट छोड़कर सारे कपड़े उतारकर उसको दे दिये और जो कुछ रुपये पास में थे वे भी दे दिये। मात्र लंगोट पहनकर सागर आ गये। उनकी माँ ने उनकी ऐसी हालत देखकर पूछा कि आपके कपड़े कहाँ हैं तो वे चुप रहे। मगर साथी ने पूरी घटना माँ को बता दी।

प्रेरक प्रसंग -

भक्ति

महाराजा छत्रसाल को औरंगजेब की सेना ने पकड़ लिया परन्तु चतुराई से वे सैनिकों की पकड़ से भाग निकले और खण्डहरों और जंगल में छिपते हुये कुण्डलपुर दमोह के जंगल में आ गये। वहाँ उनकी मुलाकात मुनिराज नमिसागर से हुई। मुनिराज ने महाराजा छत्रसाल को कुण्डलपुर में भगवान महावीर के दर्शन कराये। महाराजा को दर्शन करके अपूर्व शांति और एक आत्मबल का अनुभव हुआ। उन्होंने प्रतिज्ञा कि यदि मैं अपनी मातृभूमि को मुस्लिम शासकों से आजाद करा सका तो इस मंदिर का जीर्णोद्धार कराऊँगा। पुण्य उदय से महाराजा ने अपनी राज्य को वापस ले लिया और उसने कुण्डलपुर के मंदिर का जीर्णोद्धार कराया और सन् 1757 की माघ सुदी पूर्णिमा दिन सोमवार को भगवान महावीर के दर्शन हेतु आये और बहुत सा धन, सोना, चांदी आदि दान दिया।

नंगा फकीर

सन् 1946 में ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ने एक व्याख्यान में महात्मा गांधी को 'नंगा फकीर' कहकर अपमानित किया। भारतवासियों को महात्मा गांधी का अपमान सहन नहीं हुआ, अनेक लोगों ने इसका विरोध किया। तब महात्मा गांधी ने चर्चिल को एक पत्र लिखा और उसमें लिखा कि कुछ लोग भले ही 'नंगा फकीर' शब्द का अपमानजनक समझें, किन्तु मैं चाहता हूँ कि मैं सच में ही 'नंगा फकीर' बन जाऊँ तो उसे अपने जीवन का परम सौभाग्य समझूँगा, पर अभी तक मैं वैसा बन नहीं सका।

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका
चहकती चेतना

बलिदान

राज्य के सैनिक पीछा कर रहे हैं और अकलंक और निकलंक भागे जा रहे हैं।

'' पूज्य भ्राता! आप असाधारण विद्वान हैं, सैनिक बिल्कुल पास आ चुके हैं। धर्म की प्रभावना के लिये आप इस तालाब में छिपकर अपनी रक्षा कीजिये।'' निकलंक ने भागते हुये अपने बड़े भाई अकलंक से कहा।

अकलंक ने कहा - निकलंक! अपने सामने तुमको मरते हुये कैसे देख सकता हूँ... तुम्हीं तालाब में छिप जाओ। मैं धर्म पर अपना बलिदान देकर धन्य हो जाऊँगा।

दोनों का स्नेहमयी विवाद और संवाद चलता रहा। अंत में अकलंक तालाब में छिप गया और निकलंक ने धर्म की रक्षा हेतु अपना बलिदान दे दिया। बाद में अकलंक ने दिगम्बर मुनिदीक्षा धारण की और जिनशास्त्रों का गहन अध्ययन किया और जैनधर्म के गौरव को पूरे भारत में फैलाया।

क्षणभंगुर तन को धर्म पर बलिदान कर दिया।
अमर हुये वे विश्व का कल्याण कर दिया।।

महानता किससे ?

यजमान जिसके दांत ऊबड़ खाबड़ छोटे बड़े होते हैं वह भाग्यशाली होता है और इस बालक की दाहिनी तरफ का ये तीसरा दांत बायें दांत के ऊपर है, इससे संकेत मिलता है यह बालक निश्चित ही महान बनेगा।- एक विद्वान ज्योतिषी ने चाणक्य के पिता को बताया। यह सुनकर 6 वर्ष का बालक चाणक्य से कहने लगा - यह दांत मुझे महान बनायेगा और उसने तुरन्त एक पत्थर उठाकर अपने टेढ़े दांत पर मार लिया। दांत टूटकर नीचे गिर पड़ा। मुंह से खून निकलने लगा। पिता और ज्योतिषी हाय हाय करते रह गये। चाणक्य ने कहा - मेरी महानता मेरे कर्तव्यों से होगी, इस दांत से नहीं। जीवन के अंतिम दिनों में दिगम्बर साधु बनने वाले चाणक्य ने चन्द्रगुप्त को राजा बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया और राष्ट्र विधाता बनकर रहा।

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका
चहकती चेतना

कोई अर्थ नहीं

राष्ट्रकवि श्री रामधारी सिंह दिनकर

नित जीवन के संघर्षों से,
जब टूट चुका हो अन्तर्मन,
तब सुख के मिले समन्दर का,
रह जाता कोई अर्थ नहीं ।।

जब फसल सूखकर जल के बिन
तिनका - तिनका बन गिर जाये,
फिर होने वाली वर्षा का,
रह जाता कोई अर्थ नहीं ।।

सम्बन्ध कोई भी हों लेकिन
यदि दुःख में साथ न दें अपना,
फिर सुख में उन सम्बन्धों का
रह जाता कोई अर्थ नहीं ।।

छोटी - छोटी खुशियों के क्षण
निकले जाते हैं रोज यहाँ,
फिर सुख की नित्य प्रतीक्षा का
रह जाता कोई अर्थ नहीं ।।

मन कटुवाणी से आहत हो
भीतर तक छलनी हो जाये,
फिर बाद कहे प्रिय वचनों का
रह जाता कोई अर्थ नहीं ।।

सुख-साधन चाहे जितने हों
पर काया रोगों का घर हो,
फिर उन अनगिनत सुविधाओं का,
रह जाता कोई अर्थ नहीं ।।

शंका समाधान

प्रश्न - भट्टाकरवाद का क्या अर्थ है ?

उत्तर - भट्टारक परम्परा का बड़ा इतिहास है। भट्टारकों के शिथिलाचार पोषक क्रियाओं का नाम भट्टारकवाद है। जैसे फूलों से पूजन करना, प्रतिमा के चरणों में चंदन लगाना, पद्मावती आदि देवी-देवताओं की पूजा करना, पंचामृत अभिषेक करना। भट्टारक के द्वारा लिखे ग्रन्थों को प्रमाण मानना, भट्टारकों को मुनितुल्य मानना ये सब क्रियायें भट्टारकवाद है।

- (सन्मति संदेश पत्रिका - 1990)

जैन धर्म की सर्वोत्कृष्टता और महानता

यदि मेरा दूसरा जन्म हो तो मैं जैन धर्म में पैदा होना चाहता हूँ।

- प्रसिद्ध ब्रिटिश लेखक जार्ज बर्नाड शॉ

दुनिया का पहला मजहब (धर्म) जैन था और अंतिम मजहब भी जैन ही होगा।

- रेवेरेन्ड

यदि जैन धर्म को दुनिया ने अपनाया होता तो यह दुनिया खूबसूरत स्वर्ग होती।

- अमेरिका के दार्शनिक विद्वान मोराइस

भगवान ऋषभदेव, भगवान नेमिनाथ, भगवान पार्श्वनाथ और भगवान महावीर ये चार तीर्थंकर नहीं बल्कि जीवन की चार दिशायें हैं।

- जस्टिस रानडे

मैं जैन हो गया हूँ (अर्थात् मैंने जैन धर्म को जान लिया है)। जैन धर्म नहीं वह तो जीने का दर्शन है। जैन धर्म खुला विश्वविद्यालय है।जैन धर्म का भेदविज्ञान आत्मा और शरीर को भिन्न कर देने वाला बहुत प्राचीन विज्ञान है। जैन दर्शन में हिंसा को पराजित करने में निम्न तीन अ का महत्व है - अहिंसा, अनेकान्तवाद, अपरिग्रह

- महान गणितज्ञ पायथोगोरस

माँ ! मुझे किसी जैन मुनि के पास ले चलो। मुझे वहीं शांति मिलेगी।

- विलियम स्टर्लिंग पार्सन्स

(1945 में हिरोशिमा और नागासाकी पर एटम बम से हमला करने वाले जनरल ने युद्ध के बाद की भीषण बरबादी देखकर उन्हें बहुत दुःख हुआ तब उसने अपने अंतिम समय में अपनी माँ से ये शब्द कहे थे।)

साभार - जैन धर्म की सर्वोत्कृष्टता और महानता
लेखक - मुजफ्फर हुसैन, मुम्बई
प्रेषक : श्री बाबूलाल जैन, बुरहानपुर

सन्तोष

दो मजदूर दिन भर काम करने के बाद बोरी बारदान बिछाकर सोने लगे। एक ने कहा - देखो ! धनवान लोग डनलप के बिस्तर पर सोते होंगे और एक हम हैं जो हमारा बारदान भी फटा हुआ है। दूसरे ने कहा - प्यारे भाई ! अभी भी ऐसे बहुत लोग हैं जिनको यह फटा हुआ बारदान बोरी भी नसीब नहीं मिलती।

उपाय

महाराजा विजय बहादुर के राज्य में पूरी प्रजा बहुत सुखी थी। प्रजा को किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं था। राजा अपनी प्रजा का संतान की तरह ध्यान रखता था। परन्तु उसकी कोई संतान नहीं थी। इसलिये उसे राज्य के भविष्य की बहुत चिंता थी।

कुछ समय बाद राजा का स्वर्गवास हो गया तो मंत्रियों ने विचार किया कि अब देश का राजा किसे बनाया जाये बहुत विचार के बाद यह निर्णय किया कि एक हाथी को सूंड़ में एक माला देकर छोड़ा जाये वह जिसके गले में माला डाल देगा उसे 1 वर्ष के लिये ही राजा बनाया जायेगा। लगातार राज्य करने से राजा अन्यायी भी हो सकता है इसलिये 1 वर्ष बाद उसे राज्य के समीप भयानक जंगल में छोड़ दिया जायेगा। यदि वह जिन्दा वापस आयेगा तो उसे फिर एक वर्ष के लिये राजा बना दिया जायेगा।

इस प्रकार विधि से हर वर्ष नया राजा बनाया जाता और एक वर्ष राज्य करने के बाद उसे उस जंगल में मरने के लिये छोड़ दिया जाता था। उसे जंगल के जानवर मारकर खा जाते थे। कोई भी राजा नहीं बनना चाहता था। लेकिन राज्य के नियम के अनुसार हाथी जिसके भी गले में माला डालता उसे राजा बनना ही पड़ता था। जैसे हम सब मनुष्य पर्याय में आकर कुछ समय सुख सुविधाओं में मस्त होकर नरक चले जाते हैं।

इस प्रकार बनने वाला हर राजा बड़े पद में होते हुये भी भविष्य की चिन्ता करता रहता था। एक बार हाथी ने एक बुद्धिमान युवक के गले में माला डाल दी परन्तु वह बिल्कुल भी दुखी नहीं हुआ। वह आनन्दपूर्वक राज्य करते हुये हमेशा खुश रहता। एक वर्ष के समय में उसने उस जंगल के बीच में अपना एक महल बनाया और उसमें सभी सुविधायें एकत्रित कर लीं। चारों ओर से जंगली जानवरों से बचने के लिये तार लगा दिये। जैसे ही उसका एक वर्ष पूरा हुआ तो वह भयानक जंगल के महल में जाकर रहने लगा। इस तरह उसको हमेशा के लिये राज्य मिल गया।

ऐसे मूर्ख मनुष्य संसार भोगों मे मस्त रहते हैं और भविष्य की चिन्ता में ही अपना समय बरबाद कर देते हैं। लेकिन विवेकी मनुष्य जीव वर्तमान में प्राप्त ज्ञान और समय में जिनवाणी को पढ़कर अपनी आत्मा का निर्णय कर लेते हैं और सम्यग्दर्शन प्राप्त कर लेते हैं। इसलिये हमें इस मनुष्य पर्याय में समय और ज्ञान का सुदपयोग करते हुये अपने कल्याण का मार्ग प्राप्त करना चाहिये जिससे अनन्तकाल तक हमें आत्मा का सुख प्राप्त होता रहे।

Think Again & Again

बच्चों के ब्रश से

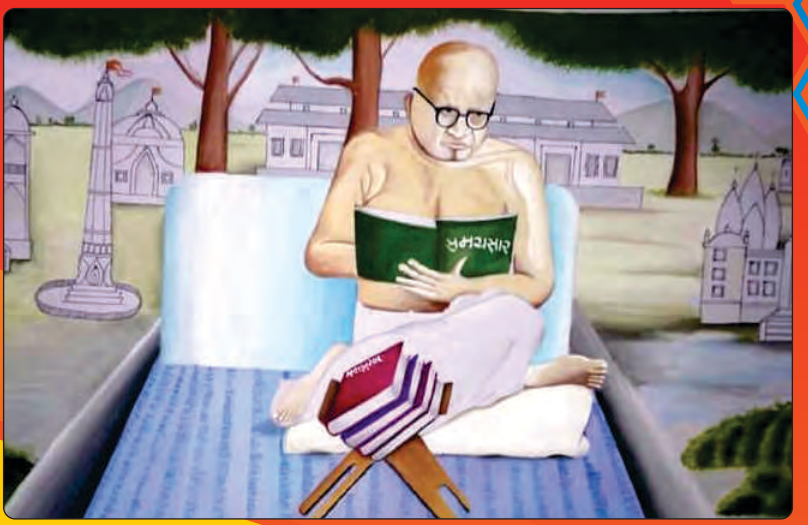

समयसार

Suvidhi Sotpute, std. 6th
अनंगधरा! मैं इसे मारकर तुम्हे बचा लूँगा।

ईर्यासमिति
जीवदया

हाँ ! मैं माली हूँ .....

हाँ! मैं माली हूँ ..... समझ में नहीं आता इसे सौभाग्य कहूँ या दुर्भाग्य..। जिनमंदिर की सेवा करते हुये मुझे 19 साल हो गये। सुबह सबसे पहले जिनमंदिर पहुँचकर मंदिर की सफाई करना, फिर सभी पूजन करने वालों के लिये टेबल लगाना, चटाई बिछाना, फिर पूजन होने के बाद फिर से सफाई। फिर सभी पूजन करने वालों के धोती-दुपट्टे धोकर डालना। इस काम में मुझे 12 या 1 तो बज ही जाता है। फिर शाम को मंदिर खोलना और सबके जाने के बाद यही दिनचर्या है मेरी।

हाँ! मैं माली हूँ .....किसी की टेबल पर थोड़ी सी धूल आ गई तो वह पूरे अधिकार से मुझे डांटता है। किसी को चटाई चाहिये तो किसी को कपड़ा और वो भी जल्दी। मंदिर आने वाला हर व्यक्ति मुझे डांटने का अधिकार रखता है। ऐसा लगता है कि मैं जिनेन्द्र भगवान का नहीं बल्कि इन सब लोगों का नौकर हूँ।

हाँ! मैं माली हूँ .....मेरा भी परिवार है। परिवार में पत्नी और दो बच्चे हैं। मंदिर ट्रस्ट ने रहने के लिये एक छोटा सा कमरा दिया है। बहुत मुश्किल से रह पाते हैं हम चारों और कभी कोई मेहमान आ जाये तो मैं मंदिर के बाहर सो जाता हूँ। मैंने कई बार मंदिर के ट्रस्टियों को अपनी समस्या बताई पर लगता है मेरी समस्या सुनने के लिये उनके कान काम करना बन्द कर देते हैं। मंदिर के मंत्री का चार मंजिला घर है और परिवार में कुल पाँच लोग। पता नहीं नहीं उन्हें मेरी पीड़ा का एहसास क्यों नहीं होता..

हाँ! मैं माली हूँ ..... कभी लगता है कि मुझे अभिशाप मिला है। हर पिता की तरह मैं भी चाहता हूँ कि मेरे बच्चे अच्छे स्कूल में जायें, बढ़िया काम करें। पर चाहने से काम नहीं होता। मेरा वेतन ही इतना कम है कि मेरा परिवार ठीक से भोजन कर ले यही बहुत है। मंदिर में सारे काम के लिये हजारों लाखों का दान देने वाले मेरे बच्चों के लिये 100 रुपये देने में मुंह चुराते हैं।

हाँ! मैं माली हूँ .....खड़ा हो जाता हूँ विशेष उत्सव और पर्वों पर मंदिर के द्वार पर। इस आशा के साथ कि अभी इन लोगों ने पूरे विश्व के सुखी होने की कामना की है तो मेरे जीवन की थोड़ी सी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये कुछ राशि मुझे भी देंगे। पर निराश हो जाता हूँ कि जब ये बड़े नोटों के बीच फंसा हुआ पुराना सा 10 रु. या 20 रु. का नोट बहुत एहसान दर्ज कराते हैं।

हाँ! मैं माली हूँ .....मंदिर से छुट्टियाँ .... ये तो मैं सोच ही नहीं सकता। एक बार परिवार के बहुत जरूरी काम से 3 दिन की छुट्टी मांगी तो ट्रस्टियों

ने साफ मना कर दिया जैसे कि माली का परिवार और उसका सुख-दुःख कुछ होता ही नहीं है। हजार बार हाथ जोड़े तब छुट्टी दी।

हाँ! मैं माली हूँ ..... मैं जाति से जैन नहीं हूँ। पर वर्षों से मंदिर की पूजायें, स्तुति, मेरी भावना आदि सुनते हुये एक बात का निश्चय हो गया है कि जैन धर्म दुनिया का सबसे अनोखा धर्म है। जिनेन्द्र भगवान ने पूरे विश्व के कल्याण का मार्ग दिया है। पर आश्चर्य है कि ये जैनी जिनेन्द्र भगवान को तो मानते हैं पर जिनेन्द्र भगवान की बात नहीं मानते। मैंने बहुत से जैनियों के दो रूप देखे हैं - एक मंदिर में तीन लोक के सभी प्राणियों के सुख की कामना करने वाला और दूसरा मंदिर के बाहर धन के लिये दूसरों के दुःखों को उपेक्षित करने वाला।

हाँ! मैं माली हूँ .....। एक बात बहुत अच्छी है जिसे पाकर मैं अपना महासौभाग्य मानता हूँ। वो है भगवान जिनेन्द्र । कोई आडम्बर नहीं, परम वीतरागी, शांत, किसी की पूजा की परवाह नहीं, किसी पर कोई क्रोध नहीं, न किसी से प्रेम। मैं भाग्यशाली हूँ कि मुझे जिनमंदिर खोलने का और सबसे पहले दर्शन का सौभाग्य मुझे मिलता है। इस सौभाग्य के आगे शायद सभी दुःख छोटे हैं।

प्रश्न - म्लेच्छ किन्हें कहते हैं **- (त्रिलोकसार 923-24-25)**

उत्तर - म्लेच्छ दो प्रकार के होते हैं - 1. कर्मभूमिज 2. अन्तर्दीपज

भरत और ऐरावत के छह क्षेत्रों में 5 म्लेच्छ खण्ड होते हैं। ढ़ाई द्वीप में 5 भरत और 5 ऐरावत हैं साथ ही विदेह क्षेत्र के 800 म्लेच्छखण्ड मिलाकर कुल 850 म्लेच्छ खण्ड हैं। इसके साथ ही लवण समुद्र 48 द्वीप और कालोदधि समुद्र में 48 द्वीप की कुल 96 कुभोग भूमियों के मनुष्य अर्न्तद्वीपज म्लेच्छ हैं। इन कुभोग भूमियों के मनुष्यों के सिर हाथी, भालू, मछली आदि के आकार आते हैं। किसी के लम्बे कान, एक पैर, पूंछ आदि भी होते हैं। वृक्षों के फल मिट्टी इत्यादि उनका भोजन है।

जो मुनि के वेश धारण कर मंत्र-तंत्र, औषधि आदि लौकिक कार्य करते हैं और गृहस्थों को खुश रखना चाहते हैं वे कुभोग भूमि में उत्पन्न होते हैं।

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर के नये संरक्षक
Agraeta Technik P. Ltd., Virar, Thane MH.
की स्वीकृति प्राप्त हुई । एतदर्थ धन्यवाद ।
संस्था परिवार में आपका हार्दिक स्वागत है।

अब नहीं नाचूँगी

माला बहुत खुश थी। उसके भाई की शादी होने वाली थी। कई दिनों से वह बाजार घूम-घूमकर अपने लिये कपड़े खरीद रही थी। सगाई, मेंहदी, बारात, रिसेप्शन सारे प्रोग्राम के लिये अलग ड्रेस। घर पर आकर सारे कपड़ों को सूटकेस में जमा रही थी। तभी उसकी बुआ आईं और बोलीं - क्या बात है माला! बहुत खुश हो..

अरे बुआ..! जय जिनेन्द्र। कब आईं? अच्छा हुआ, आप आ गईं। आइये! मैं आपको अपने नये कपड़े दिखाती हूँ। ये देखो बुआ! ये ड्रेस सगाई की, ये ड्रेस मेंहदी की और ये पिंक वाली बारात के लिये... जब भैया घोड़े पर बैठेंगे तो इसे पहनकर मैं बारात में नाचूँगी और ये परपल कलर की रिसेप्शन के लिये। है ना बहुत सुन्दर..

हाँ.. अच्छी तो है...- बुआ ठंडी सी प्रतिक्रिया देती हुई बोलीं।

क्या बात है बुआ! आपको मेरे कपड़े अच्छे नहीं लगे क्या...?

नहीं-नहीं, ऐसी कोई बात नहीं। अच्छे हैं...

तो आपके चेहरे पर खुशी नहीं है। बताओ न बुआ। यदि कुछ गड़बड़ है तो मैं चेंज कर लूँगी।

नहीं बेटी! तुम्हें अच्छा नहीं लगेगा।

ऐसी कोई बात नहीं बुआ। आपने मुझे हमेशा माँ का प्यार दिया है। आप बताईये ना..क्या बात है ?

माला बेटी! ये तुम्हारी पिंक ड्रेस स्लीवलेस है और इसे पहनकर तुम बारात में सड़कों पर नाचोगी..

थो क्या हुआ बुआ ? आजकल तो ये फैशन है और अपने भाई की शादी में नहीं नाचूँगी तो कहाँ नाचूँगी.. ? माला बुआ की बात के बीच में ही बोली।

बेटी.. मैं न तो फैशन का मना कर रही हूँ और ना नाचने के लिये। तुम स्वयं सोचो जब तुम ये ड्रेस पहनकर नाचोगी तो सड़कों पर आने-जाने वाले हर व्यक्ति तुम्हें घूरकर देखेगा और उनमें न जाने कैसे-कैसे गंदी सोच के लोग होंगे और वे आपस में तुम्हारे बारे में गंदी बातें करेंगे।

इसमें मैं क्या कर सकती हूँ ? इनमें उनकी सोच का दोष है.. माला ने सफाई देते हुये कहा।

बुआ ने समझाते हुये कहा - पर मौका तुम दे रही हो। फिर जिनवाणी में आये हुये शील पालन के उपदेश सब व्यर्थ हो जायेंगे। क्या तुम ये चाहती हो कि लोग तुम्हारे अंगों को देखें और गंदे कमेन्ट्स करें? मुझे याद है जब पिछले साल एक दिन तुम कॉलेज से रोते हुये अपने पापा के पास आईं थीं और तुमने बताया था कि कॉलेज के रास्ते में एक लड़के ने तुम्हें कुछ गलत कह दिया था, फिर तो अब तुम स्वयं उन्हें मौका दे रही हो और सड़कों पर नाचना ये हमारे धर्म और नैतिकता को शोभा देता है क्या? इसमें शील में महादोष का महापाप लगता है। फिर हमारी महान परम्परा, हमारी महान नारियों सीता, अंजना आदि का क्या होगा ? हमारे देश की पवित्र परम्परा में मेवाड़ की रानी पद्मिनी ने अपना चेहरा दूसरे को न दिखाना पड़े इसके लिये प्राण तक दे दिये। हम अपनी पवित्र परम्परा सड़कों पर नाचकर नाश कर रहे हैं। एक दिन के नाचने के लोभ में अपने शील को नीचे मत गिराओ। पर पुरुषों के सामने नाचने से यश और धन तो मिल सकता है परन्तु इसके फल में जो दुर्गति होगी उसकी तुम कल्पना भी नहीं कर सकती।

आप सच कह रही हैं बुआ..!

बेटी! मैं तेरा बुरा सोच भी नहीं सकती। हमारे गुरुओं के निर्देश हमारी रक्षा के लिये हैं। ये बंधन नहीं, सौभाग्य है।

थैंक्यू बुआ! आप वास्तव में माँ हैं। आज से प्रतिज्ञा करती हूँ कि मैं अभद्र कपड़े नहीं पहनूँगी और न ही दूसरों के सामने नाचकर यश के लिये अपने शील में दोष लगाऊँगी।

वाह! ये हुई न बात।

तो चलें बुआ!

कहाँ बेटी?

अरे कपड़े चेंज करने। इतना कहकर माला और बुआ खिलखिलाकर हंस पड़ीं।

- विराग शास्त्री

सहयोग प्राप्त -

11000/- प्रासुक अतीत शाह, तलौद गुज.
5000/- श्रीमति शिल्पा अतुल बाकलीवाल, पुणे
5000/- श्री विजय जैन (मामाजी), पुणे
2100/- श्रीमति हंसा विजय पामेचा, जबलपुर
2000/- श्रीमति चेरी सर्वज्ञ भारिल्ल के जन्मदिवस पर
हस्ते श्रीमति कमला रतनचन्दजी भारिल्ल, जयपुर
1000/- श्रीमति मालती - डॉ.एस.सी. जैन, जबलपुर

तमिलनाडु में जैन धर्म

(यह लेख स्वर्गीय डॉ. एम करुणानिधि द्वारा लिखित 'तमिलनाडु में जैनधर्म' पुस्तक से लिये गये हैं। श्री करुणानिधि द्रमुक पार्टी के नेता थे और तीन बार तमिलनाडु के मुख्यमंत्री रहे। इन्होंने तमिल साहित्य के संरक्षण में महत्वपूर्ण कार्य किया और लगभग 100 पुस्तकों का लेखन किया। दिनांक 7 अगस्त 2018 को 94 वर्ष की उम्र में इनका निधन हुआ।)

श्रमण धर्म प्रेम और करुणा का पर्याय बन गया है। श्रमण (मुनिराज) धर्म का मतलब जैनधर्म है। जैनधर्म एक प्राचीन धर्म है,यह धर्म ईसा मसीह के जन्म के सैकड़ों वर्ष पहले से ही था। यह तोलक्कपियम (तमिलनाडु) में पहले अच्छी तरह से फैला हुआ था, पवित्र जैन साहित्यकारों ने हमारी तमिल माँ को अपने शब्दरूपी गहनों से सजाया था। यदि हम श्रमणों को तमिल साहित्य से अलग कर देते हैं तो तमिल साहित्य निर्जन सा जान पड़ेगा। तमिल भाषा के विकास में जैन कवियों का बहुत बड़ा योगदान है। प्राचीन राजाओं ने भी जैन कवियों के कार्य को प्रोत्साहन दिया और उनका समर्थन किया। जैन धर्म को मानने वाले कई कवि तमिलनाडु में रहते हैं। कई लोगों ने जैन धर्म को स्वेच्छा से अपनाया। जैन धर्म का महान सिद्धान्त है कि दुनिया किसी के द्वारा नहीं बनाई गई।

तमिलनाडु में जैनधर्म ईसा मसीह से सैकड़ों वर्ष पूर्व प्रचलित था इसके कई पुरातात्विक प्रमाण मिलते हैं। यहाँ के राजाओं और सामान्य प्रजा ने दिगम्बर श्रमणों मुनिराजों के रहने के लिये गुफाओं का निर्माण करवाया जो आज भी तमिलनाडु में अनेक स्थानों पर देखने को मिलतीं हैं, इनमें ब्राह्मी लिपि में लेख खुदे हैं। वास्तव में यहाँ की द्रविड संस्कृति जैन संस्कृति का ही दूसरा रूप थी, बाद में द्रविड़ परम्परा को बनाये रखने के लिये जैन आचार्यों ने द्रविड़ संघ नाम के मुनि संघ की स्थापना की। तमिल वेद के नाम से प्रसिद्ध ग्रन्थ तिरुक्कुल काव्य (कुरल काव्य) के रचियता प्रसिद्ध जैन आचार्य एलाचार्य कुन्दकुन्द थे। यह नीति ग्रन्थ इतना लोकप्रिय हुआ कि शैव, बौद्ध के साथ ईसाई

विद्वानों ने भी इस पर अपना अधिकार जमाना प्रारम्भ कर दिया। तमिल साहित्य के संरक्षण और संवर्धन में श्रमण संस्कृति का योगदान अभूतपूर्व है। तमिल साहित्य की प्राचीन कृति तमिल व्याकरण तोलकाप्पियम् (ईसा से तीसरी शताब्दी पूर्व) भी जैन आचार्य तोलक्कापियर द्वारा लिखित मानी जाती है। तमिल भाषा के पाँच महाकाव्य हैं जिनमें से तीन जीवकचिन्तामणि, सिलप्पधिकारं, वलैयापति जैन आचार्यों द्वारा लिखित हैं।

जैन धर्म प्रेमियों द्वारा बनाये गये अनेक जैन मंदिर और मूर्तियाँ तमिलनाडु में सैकड़ों स्थानों पर हैं। कई जगह उसका स्वरूप परिवर्तित कर दिया गया है। जैन धर्म पर आक्रमण के बारे में शैव ग्रन्थ पेरियपुराणं, तिरुविलैवाडर में उल्लेख है कि मदुरै में एक ब्राह्मण के कहने पर शैव राजा ने 8000 जैन मुनियों को फांसी पर लटका दिया था। इसके दृश्य आज भी मदुरै के मीनाक्षी मंदिर में पत्थर पर उत्कीर्ण हैं। शिक्षा के क्षेत्र में जैनियों का बहुत योगदान रहा। जिंजी के पाव विडाल में एक पल्लि (पाठशाला) का संचालन जैन साध्वी आर्यिका गुणवीर करतीं थीं, इसमें 500 बालिकायें विद्याध्ययन करतीं थीं। इसके प्रमाण पत्थर पर उत्कीर्ण शिलालेख हैं।

जैन श्रमण एक स्थान पर नहीं रुकते थे, वे निरन्तर विहार करते थे। इनका इतना प्रभाव था कि पूरे तमिल प्रदेश में अध्ययन करने के पहले ऊँ नमः सिद्धम् का उच्चारण किया जाता था। तमिलनाडु के महान आचार्य कुन्दकुन्द, आचार्य समन्तभद्र, आचार्य अकलंकदेव ने अध्यात्म, तर्क और न्याय के जिन ग्रन्थों की रचना की उनके समान आज तक कोई जैन लेखक रचना नहीं कर पाया। आज भी तमिलनाडु में जैन धर्म के अवशेष बिखरे हैं, यदि इनकी सही रूप से खोज हो तो सिंधुघाटी के समान एक और सभ्यता मिल सकती है।

धन का उपयोग

प्रसिद्ध आध्यात्मिक ग्रन्थ देवी विलास के रचनाकार पण्डित देवीदासजी दिगोड़ा की आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर थी। वे एक बार उत्तरप्रदेश पढ़ने गये वे भोजन स्वयं बनाते थे। वे प्रतिदिन एक पैसे की लकड़ी लाते थे और चूल्हे पर रोटी बनाने के बाद लकड़ी का जो कोयला बनता था उसे एक सुनार को एक पैसे में बेच देते थे। इस प्रकार उन्होंने 1 वर्ष तक एक पैसे की लकड़ी लेकर रोटी बनाई और अन्त में एक पैसा भी बचा लिया। धन पाकर उसका उपयोग करना चाहिये।

सावधान!
मोबाइल का अति प्रयोग खतरे की घंटी है...

हमारी सबसे बड़ी जरूरत आज सबसे बड़ा खतरा बनती जा रही है

मोबाइल हम सबके जीवन के सबसे आवश्यक अंग बन गया है। शास्त्रों में व्यवहार से जीव के दस प्राण बताये हैं, ऐसा लगता है कि मोबाइल ग्यारहवाँ प्राण हो गया है। मोबाइल के बिना जीवन सूना लगने लगा है। परन्तु क्या हम इसके खतरे से सावधान हैं? हम बच्चों के रोने या जिद करने पर तुरन्त उन्हें मोबाइल देकर अपने कर्तव्य पूरा कर लेते हैं। मोबाइल का अतिप्रयोग उनके भविष्य बरबादी की पूरी तैयारी है।

मलेशिया अपने यहाँ बच्चों के इंटरनेट उपयोग के लिये नये नियम लाने की तैयारी कर रहा है। मलेशिया के स्वास्थ्य मंत्री डॉ. ली बून ये ने बताया - आज किशोरों को एक क्लिक पर ऐसे वीडिया गेम एप उपलब्ध हैं कि जो किशोर वर्ग के वीडियो गेम की भयंकर लत लगा रहे हैं। मंत्री के अनुसार मलेशिया में किये गये एक राष्ट्रीय स्वास्थ्य सर्वे के अनुसार किशोर वर्ग के 35 प्रतिशत बच्चे इंटरनेट की लत का शिकार हो चुके हैं। अब मलेशिया में 13 से 17 साल तक की उम्र के बच्चों रात्रि 12 बजे से सुबह 6 बजे तक इंटरनेट प्रयोग करने की अनुमति नहीं होगी। जापान में यह नियम कानून के रूप में काम कर रहा हैा चीन में बच्चों को इंटरनेट की लत छुड़ाने के लिये रिहैब सेंटर शुरु हो चुका है। अल्जीरिया में अभी परीक्षा के दौरान इंटरनेट बंद रहता है जिससे बच्चे अपना ध्यान पढ़ाई में लगा सकें। विश्व स्वास्थ्य संगठन डब्ल्यू एच ओ की एक रिपोर्ट के अनुसार वीडियो गेम की लत के कारण बच्चे मानसिक रूप से बीमार हो रहे हैं। इसके कारण बच्चे न ठीक से भोजन करते हैं, न ही वे भरपूर नींद ले पाते हैं। इसे दूसरी भाषा में मेंटल डिस्टर्बेंस कहा जाता है।

ये समस्या सम्पूर्ण विश्व में फैल रही है। जयपुर में सवाई मानसिंह अस्पताल में माइग्रेन और डिप्रेशन की बीमारी लगभग 200 बच्चे हर महीने आ रहे हैं। इसका एकमात्र कारण मोबाइल का अतिप्रयोग है। इस अस्पताल की अध्ययन रिपोर्ट के अनुसार 5 से 15 वर्ष के 17 प्रतिशत बच्चे मायोपिया बीमारी का शिकार हैं। पाँच-पाँच घंटे मोबाइल से चिपके रहने के कारण उन्हें मोबाइल का एडिक्शन हो

रहा है। उनसे मोबाइल छीनने पर वे रोते हैं, चीखते हैं और झगड़ते हैं। कई बार तो पागलों के जैसा भी व्यवहार करने लगते हैं।

मोबाइल की वजह से छह से सात साल की उम्र के बच्चों मे ड्राय आईज, आंखों में जलन और ईयर इंफेक्शन जैसी बीमारियाँ हो रहीं हैं। सरकारी और निजी अस्पतालों में प्रतिदिन इन बीमारियों के बच्चे आ रहे हैं। मोबाइल के अधिक प्रयोग से मेमोरी पर भी असर पड़ रहा है जिससे उनकी पढ़ाई प्रभावित हो रही है।

अब सायबर क्राइम भी - इंदौर की सायबर सेल के एसपी जितेन्द्र सिंह के अनुसार छोटे-छोटे बच्चे अपने पिता या परिवार के सदस्यों के मोबाइल से रुपये चुरा रहे हैं। बच्चे सायबर अपराधी बन रहे हैं। इंदौर की एक शिक्षिका के 12 वर्षीय एक छात्र को ऑनलाइन गेम के लेबल को पार करने के लिये फेसबुक आईडी की जरूरत थी उसने अपनी मेडम की फोटो लेकर उसकी फर्जी आईडी बना दी।

एक बड़े स्कूल के 10वीं कक्षा के छात्रा को पिता ने पिकनिक पर जाने से मना किया तो उसने पिता के नहाते समय पिता के मोबाइल और क्रेडिट का उपयोग कर 35 हजार रुपये ट्रांसफर कर लिये। बैंक से आये ट्रांजेक्शन एसएमएस को उसने डिलीट कर दिया।

एक महिला से रिपोर्ट लिखवाई की उसके बैंक खाते से रोज 1000 रुपये निकल रहे हैं। जाँच करने पर पता चला कि उस महिला के भाई का बेटा मौका पाकर बुआ का फोन उपयोग कर अपने ई वालेट में प्रतिदिन 1000 रु. ट्रांसफर कर रहा था।

ये वे घटनायें हैं जो मोबाइल के दुरुपयोग या अतिप्रयोग से बरबादी का संकेत दे रहे हैं। यदि समय रहते बच्चों पर अंकुश नहीं लगा गया तो अगला शिकार हमारा आपका परिवार भी हो सकता है। आने वाली घटनायें आपकी वर्तमान में बच्चों के प्रति अतिराग और प्रमाद को माफ नहीं करेंगी। कहीं ऐसा न हो भविष्य आपको सोचने पर मजबूर करे कि समय पर अनुशासन किया होता तो बुरे दिन न देखने पड़ते....

चलते-चलते

हॉस्पिटल में एक महिला ने एक बच्चे को जन्म दिया। बच्चा कमजोर होने के कारण उसे दूसरे वार्ड में इनक्यूबरेटर में रखा गया। महिला को जैसे ही होश आया तो वह अपने हाथों से बिस्तर टटोलने लगी। महिला को घबराई हुई देखकर नर्स भागकर उसका बच्चा लेकर आई और उसके हाथों में देकर बोली - मेडम! बच्चा बहुत कमजोर था, इसलिये रिकवरी के लिये इनक्यूबरेटर में रखा था। महिला बोली - तुमसे बच्चा किसने मांगा था? मैं तो अपना मोबाइल ढूंढ रही थी।

ज्ञानोदय सिद्धांत महाविद्यालय का मंगल शुभारंभ और वेदी प्रतिष्ठा सम्पन्न

भोपाल के समीप विदिशा रोड पर दीवानगंज क्षेत्र में नवनिर्मित तीर्थधाम ज्ञानोदय में श्री ज्ञानोदय दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय का मंगल शुभारम्भ भव्य समारोहपूर्वक हुआ। साथ ही श्री सवमशरण जिनालय में जिनप्रतिमाओं की स्थापना की गई। श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, ज्ञानोदय भोपाल द्वारा दिनांक 6 जुलाई से 8 जुलाई तक आयोजित त्रिदिवसीय कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रथम दिवस यागमण्डल विधान,भगवान शीतलनाथ विधान के बाद समवशरण वेदी शुद्धि और भगवान शीतलनाथ की चार प्रतिमाओं की अत्यंत भक्तिपूर्वक वातावरण में स्थापना की गई। कार्यक्रम में ब्र. हेमचन्दजी देवलाली, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित शिखरचन्द विदिशा, पण्डित कस्तूरचन्दजी जैन भोपाल, ब्र.श्रेणिकजी, श्री विराग शास्त्री जबलपुर, पण्डित पुनीत जैन भोपाल, संयम शास्त्री नागपुर का लाभ प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम के अंतिम दिवस श्री ज्ञानोदय सिद्धान्त महाविद्यालय के शुभारम्भ श्री अनन्तराय ए. सेठ और श्री निमेषभाई शांतिलाल शाह परिवार मुम्बई, की ओर से श्री विमलकुमारजी जैन दिल्ली के करकमलों से हुआ। इस अवसर पर राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान दिल्ली के कुलपति डॉ. श्री पी.एन. शास्त्री तथा भोपाल के अनेक वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन संस्थान के निदेशक डॉ. महेश शास्त्री ने किया। ज्ञातव्य है कि इस वर्ष ज्ञानोदय विद्यालय में 18 विद्यार्थियों को कक्षा ग्यारहवीं में प्रवेश दिया गया है। इन विद्यार्थियों को भविष्य में सरकारी उच्चपदों के लिये होने वाली परीक्षाओं की विशेष तैयारी करवाई जायेगी।

सम्पूर्ण कार्यक्रम बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री और रजनीभाई दोशी के निर्देशन में सम्पन्न हुये। कार्यक्रम में आभार अध्यक्ष श्री देवेन्द्र जैन और श्री अशोक जैन ने व्यक्त किया।

- प्रमेश शास्त्री, प्रबंधक

शंका समाधान

प्रश्न - सुना है कि पंचमकाल में कुछ द्रव्यलिंगी भ्रष्टमुनि और उनके सेवक नरक जायेंगे इसका क्या प्रमाण है ?

उत्तर - इस पंचम काल में साढ़े सात करोड़ जिनमुद्रा धारी नग्न परन्तु परिग्रह परिणाम वाले मुनि नरक जायेंगे तथा ऐसे उनके सेवक 55 करोड़ 65 लाख 25 हजार 5 सौ 20 भ्रष्ट गुरुओं के श्रद्धानी भी पंचम काल में नरक में जायेंगे।

- (चर्चा संग्रह पेज 154)

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका
चहकती चेतना

पूना नगरी में दशलक्षण पर्व सानन्द संपन्न

देश की प्रसिद्ध औद्योगिक नगरी पूना में वीतराग विज्ञान युवा संघ द्वारा शाश्वत आराधना के महापर्व दशलक्षण सानन्द संपन्न हुये। पूना के बानेर उपनगर में आयोजित इस कार्यक्रम में विशेष आमंत्रित श्री विराग शास्त्री जबलपुर का लाभ प्राप्त हुआ। कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रातः श्री जिनेन्द्र प्रक्षाल और पूजन के बाद दशलक्षण मण्डल विधान का आयोजन हुआ। इसके पश्चात् समयसार ग्रन्थराज पर स्वाध्याय का लाभ प्राप्त हुआ। रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति के बाद जिनागम के विभिन्न विषयों पर स्वाध्याय हुआ। इसके बाद मंगलाष्टक के अर्थ पर विशिष्ट कक्षा का आयोजन हुआ। एक दिन युवा संघ द्वारा **छः द्रव्यों का नेता कौन** नाटिका प्रस्तुत की गई।

दोपहर में यथासमयानुसार युवा विद्वान श्री अतुल बाकलीवाल के द्वारा स्वाध्याय हुआ। विधान के कार्यक्रम मंगलार्थी श्री अनुभव जैन और श्री नमन जैन ने संपन्न कराये।

चहकती चेतना की सदस्यता अब पेटीएम से भी

चहकती चेतना का लाभ सभी को सरलता से मिल सके और सभी आसानी से इसके सदस्य बन सकें - इसके लिये पेटीएम भुगतान सुविधा प्रारम्भ की गई है। अब आप सदस्यता शुल्क 9300642434 पर पेटीएम से भी जमा कर सकते हैं। आप राशि बैंक अथवा पेटीएम से जमा कर अपना पूरा पता हमें व्हाट्सएप / करें।

आप बीती

दसलक्षण पर्व के बाद मनाया जाने वाला क्षमावाणी का पर्व आज मात्र औपचारिकता बनकर रह गया है। हम क्षमा का संदेश भेजकर ही अपने कर्तव्य की पूर्ति कर लेते हैं। न तो भेजने वाले को पता है कि इस संदेश में क्या लिखा है और न संदेश पाने वाला पढ़ता है और 95 प्रतिशत संदेश फारवर्ड किये हुये होते हैं। इसका उदाहरण देखिये -

मैं इस वर्ष के दसलक्षण पर्व पूना महानगर में संपन्न करके लौट रहा था तभी क्षमावाणी का दिन होने से अनेक साधर्मियों के क्षमावाणी सम्बन्धी संदेशों की बाढ़ आ गई। जब एक अनजान नम्बर से मुझे क्षमावाणी सन्देश आया तो उत्सुकतावश मैंने उस नम्बर पर फोन किया और पूछा कि मैं विराग शास्त्री। आपका क्षमावाणी सन्देश आया है, क्या आप मुझे जानते हैं? वह बोले - नहीं, मैं आपको नहीं जानता। तो फिर मैंने प्रश्न किया कि जब आप मुझे जानते ही नहीं तो फिर आपने ये सन्देश क्यों भेजा ? तो उन्होंने बड़ी मासूमियत से उत्तर दिया कि गल्ती से आपको चला गया होगा। मैं यह सन्देश भेजने के लिये क्षमा चाहता हूँ।

दौलताबाद का प्राचीन जैन मंदिर अब

भारत माता का मंदिर

महाराष्ट्र के देवगिरि दौलताबाद नाम का एक नगर है। यह नगर औरंगाबाद से 15 किमी की दूरी पर एलोरा गुफा की ओर जाने वाले रास्ते पर स्थित है। यहाँ एक स्थान पर विशाल चट्टान पर एक किला है। देवों की पहाड़ी के नाम से इस देवगिरि कहा जाता है। इस किले का निर्माण 1187 में चालुक्य राज में शक्तिशाली यादव राजा भिलम्मा पंचम द्वारा किया गया था। इसके अन्दर एक विशाल जैन मंदिर का निर्माण कराया गया। सन् 1296 में अलाउद्दीन खिलजी ने इस किले को जीत लिया और जैन मंदिर की प्रतिमाओं को जबरदस्ती तोड़कर किले में ही दबा दिया और वहाँ पर मंदिर की सामग्री से जामा मस्जिद बना दी। सन् 1327 में मोहम्मद ने अपनी राजधानी दिल्ली से बदलकर देवगिरि कर दी और इसका नाम बदलकर दौलताबाद कर दिया। इसके बाद अनेक शासकों ने राज्य किया। सन् 1724 में हैदराबाद के निजाम ने अपने राज्य को मुगल राज्य से स्वतंत्र होने की घोषणा कर दी और 1947 तक यहाँ राज्य किया।

सन् 1948 में भारत सरकार ने हैदराबाद के निजाम से सारे अधिकार वापस ले लिया। उस समय जैन समाज ने जैन मंदिर के दुबारा निर्माण का निवेदन किया परन्तु सरकार ने उनके निवेदन को नहीं माना और उसे

भारत माता का मंदिर घोषित कर दिया। मंदिर के गर्भ गृह में 52 और एक हॉल में 152 कलात्मक पिलर हैं।

सन् 1985-86 में मंदिर की दक्षिण की ओर खुदाई की गई और वहाँ से प्राचीन जैन प्रतिमायें और मंदिर के अवशेष प्राप्त हुये जो कि वहीं पर पुरातत्व विभाग के संग्रहालय में रखे गये हैं।

ड्रग्स छोड़ने जैसा मुश्किल हो जाता है जंक फूड छोड़ना माइग्रेन और डिप्रेशन की संभावना

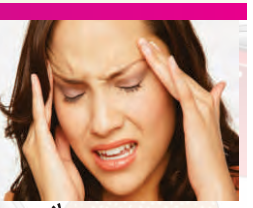

जंक फूड छोड़ने का असर ड्रग्स छोड़ने जैसा कष्टदायी हो सकता है - मिशिगन यूनिवर्सिटी न्यूयार्क के एक रिसर्च में यह बात सामने आई है। आजकल बड़े शहरों के युवाओं में जंक फूड का खाने का चलन बढ़ गया है। आज का युवा नौकरी के लिये परिवार से दूर बैंगलोर, पूना, मुम्बई, हैदराबाद जैसे नगरों में रह रहा है। घर का भोजन न मिलने से जंक फूड से ही पेट भरने का फैशन इस समय जोरों पर है। धीरे-धीरे इसकी लत पड़ जाती है और स्वास्थ्य सम्बन्धी अनेक बीमारियाँ तो होतीं ही हैं साथ ही इसे छोड़ना मुश्किल हो जाता है। इसमें रिपोर्ट में कहा गया है कि लगातार जंक फूड खाने वाला व्यक्ति यदि जंक फूड बन्द कर दे तो उसे कम से कम एक हफ्ते थकान, डिप्रेशन और माईग्रेन आदि की समस्यायें रह सकती हैं। यह ड्रग्स छोड़ने जैसी भयंकर पीड़ा देता है।

फास्ट फूड से मोटापा बढ़ता है साथ ही इसमें शक्कर और नमक की मात्रा अधिक होने के कारण मनुष्यों में अधिक खाने की इच्छा पैदा होती है। दुनिया की करीब एक चौथाई जनसंख्या मोटापे का सामना कर रही है। इसके कारण हर 8 में से 1 व्यक्ति डायबिटीज टाइप 2 का शिकार होगा और दिल की बीमारियों व कैंसर का खतरा बढ़ेगा। यदि आप इस आदत के शिकार हैं तो आप सावधान हो जाईये। कहीं जीभ का स्वाद स्वास्थ्य पर भारी न पड़ जाये।